

द्वयर्थ/द्वयर्थक वि. (तद्.) जिसके दो अर्थ हों, दो अर्थों वाला, द्वि-अर्थक।

द्वंद्वमूलक वि. (तत्.) संघर्ष पर आधारित या उससे उत्पन्न जैसे- पाश्चात्य संस्कृति द्वंद्वमूलक है।

द्वंद्व-युद्ध पुं. (तत्.) दो व्यक्तियों का परस्पर युद्ध।

द्वंद्वशः क्रि.वि. (तत्.) दो-दो करके, जोड़े में।

द्वंद्वात्मक वि. (तद्.) संघर्षपूर्ण, द्वंद्वशील।

द्वंद्वी वि. (तत्.) 1. परस्पर जोड़ा बनाने वाले दो 2. परस्पर लड़ते-झगड़ते या विरुद्ध रहने वाले दो 3. उपद्रव/झगड़ा करने वाला पुं. उपद्रवी/झगड़ालू व्यक्ति।

द्वय वि. (तत्.) 1. दुगना, दुहरा 2. दो प्रकार का पुं. 1. (समासयुक्त शब्दों के अन्त में) जोड़ा जैसे- नीतिद्वय 2. दो प्रकार का स्वभाव 3. मिथ्यापन।

द्वयवादी वि. (तत्.) दो परस्पर विरोधी दो प्रकार की बातें कहने वाला, दुरंगी बातें कहने वाला।

द्वयात्मक वि. (तत्.) दो प्रकार के स्वभाव वाला।

द्वादश वि. (तत्.) 1. बारह 2. बारहवाँ।

द्वादशदली वि. (तत्.) (वन) वह फूल जिसमें बारह पंखुडियाँ हों।

द्वादश भाव पुं. (तत्.) किसी वस्तु का बारहवाँ भाग।

द्वादशाक्षर पुं. (तत्.) बारह अक्षर; वि. बारह अक्षरों वाला।

द्वादशांगुल वि. (तत्.) 1. जो नाप/माप में 12 अंगुल हो 2. जिसकी 12 उँगलियाँ हों।

द्वादशाभरण पुं. (तत्.) (मध्य काल में प्रचलित) स्त्रियों के बारह विशेष आभूषण-सीसफूल, टीका, बाली, बेसर, कंठश्री, हार, करधनी, नूपुर, बाजूबंद, चूड़ी, कंकण और अँगूठी।

द्वादशाह पुं. (तद्.) 1. बारह दिन चलने वाला एक यज्ञ 2. मृत व्यक्ति की मृत्यु के 12वें दिन किया जाने वाला श्राद्ध।

द्वादशी स्त्री. (तत्.) चांद्र मास के शुक्ल/कृष्ण पक्ष की 12वीं तीथि।

द्वादसबानी वि. (तद्.) बारहबानी, खरा।

द्वादसि वि. (तद्.) द्वादशी।

द्वापर/द्वापर पुं. (तत्.) सत्ययुग आदि चार युगों में से तीसरा युग, त्रेतायुग और कलियुग के बीच का युग।

द्वाभा स्त्री. (तद्.) 1. प्रातः और संध्या के समय का धीमा प्रकाश 2. मंद प्रकाश।

द्वार पुं. (तत्.) ऐसा खुला स्थान जिससे होकर घर/भवन/कमरा आदि से बाहर निकला जा सके या उसमें प्रवेश किया जा सके, बहिर्गमन-मार्ग या प्रवेश-मार्ग, दरवाज़ा, रंध, छिद्र; उदा. दरवाजे के समान दो स्थानों के बीच का खुला स्थान जिससे आना-जाना सम्भव हो।

द्वार कपाट पुं. (तत्.) दरवाज़े का किवाड़।

द्वारकाधीश/द्वारकानाथ/द्वारकेश पुं. (तत्.) 1. द्वारका का स्वामी, कृष्ण 2. द्वारका में स्थित भगवान् कृष्ण की मूर्ति।

द्वार स्त्री. (तत्.) 1. विवाह के बाद वधू के ससुराल आने पर उसकी ननद द्वारा वरवधू का मार्ग रोककर खड़े होने की रोचक प्रथा जिसमें वर अपनी बहिन को नेग देता है तब रास्ता खुलता है 2. उक्त अवसर पर बहन को दिया जाने वाला या मिलनेवाला धन आदि।

द्वारपंडित पुं. (तत्.) (मध्य युग में) किसी भवन/विश्वविद्यालय आदि में द्वार पर स्थित विद्वान् जो प्रवेश चाहने वाले व्यक्ति के ज्ञान की परीक्षा ले तथा संतुष्टि होने पर ही प्रवेश करने दे।

द्वारपर्दा पुं. (तत्.+फा.) दरवाज़े पर टाँगने का पर्दा।

द्वारपाल पुं. (तत्.) दो आधारों वाली, द्वार पर नियुक्त रक्षक, ड्योढ़ीदार, दरबान।

द्वार-पूजा स्त्री. (तत्.) विवाह में कन्या के घर पर बरात पहुँचने के समय द्वार पर स्वागत के बाद होनेवाले पूजन आदि धार्मिक कृत्य, द्वाराचार।